CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हि. दि. २६

श्री महा मुनि वीरसागर प्रणीत

तत्त्वार्थसूत्र

दोहा-बद्ध

अर्थात्

१. तत्त्वार्थ [illegible]

२. लघु तत्त्वार्थ सूत्र।

३. वस्तु स्थिति।

पुस्तक नं. २१३...
दिनांक.....
[illegible] (का. हि. वि.

प्रकाशक:—

छोगालाल श्रीनन्दनलाल,

अशोक नगर, म० भा०

प्रथमा वृत्ति	फाल्गुन शुदी १५	मूल्य
२०००	वी० सं० २४८०	आठ आना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

❀ स्याद्वाद ❀

वर्ग संख्या 2 / हि २६ प्राप्ति-संख्या 213

ग्रन्थ-कार्ड

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम तत्त्वार्थसूत्र दोहावली

लेखक मुनि क्षीरसागर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

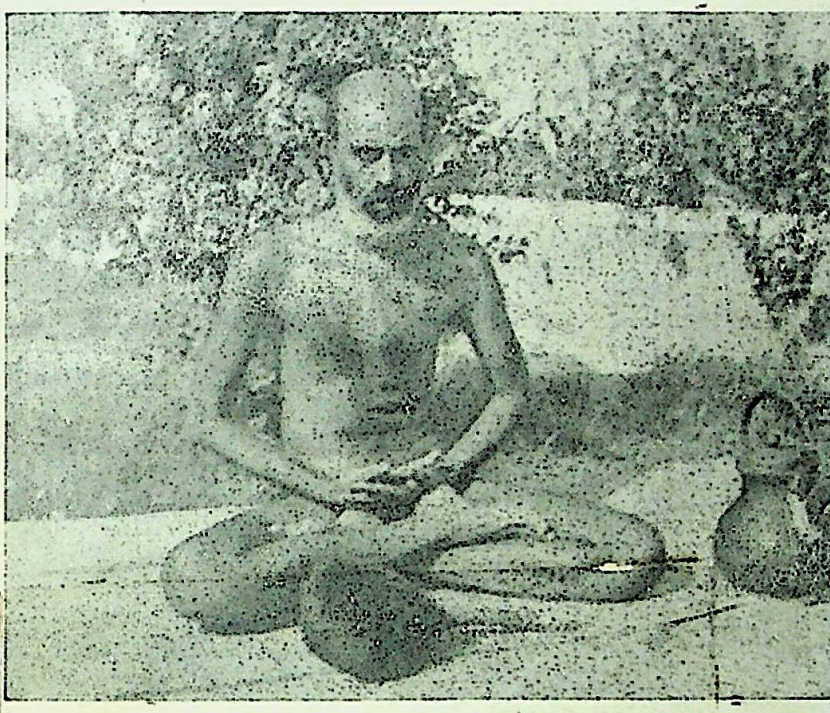

अनेक ग्रन्थों के कर्ता और अनेक अतिशय
[स्वयंबोधित, परमअध्यात्मयोगी, विद्यमानभोगपरिहारी,
दम्पतिमहाव्रतधारी, एकाकीविहारी, जिनवरलिङ्गधारी,
महासाहित्यिक, महावादी, महाकवि] के
धारक परमपूज्य श्री १०८ महामुनि
क्षीरसागरजी महाराज ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust. eGangotri

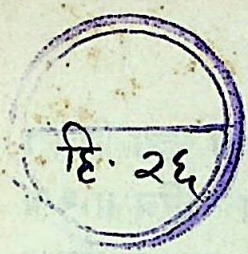

* श्री वीतरागायनमः *

* श्री महा मुनि क्षीरसागर प्रणीत *

* तत्त्वार्थ सूत्र *

(दोहा–बली)

मोक्ष मार्ग नेता भिदा, कर्म शैल के ऐन ।
अरु ज्ञाता सब तत्त्व के, वन्दों तद् गुण लेन ॥ १ ॥
तीन काल नव तत्त्व अरु, द्रव लेश्या छह काय ।
ज्ञान चरण गति व्रत समिति, पन पन अस्ती काय ॥ २ ॥
मोक्ष मूल इतना कहा, त्रिभुवन पति अरहन्त ।
रुचि प्रतीति कर जो गहे, ते सत् दृष्टि महन्त ॥ ३ ॥
त्रिभुवन सिद्ध प्रसिद्ध हैं, तत्त्वारथ फल पाय ।
कहूँ वंदि अरहन्त को, जो तत्त्वार्थ कहाय ॥ ४ ॥
जियाजियाश्रव बंध अरु, संवर निर्जर मोख ।
इन तत्त्वों में हेय तज, उपादेय को पोख ॥ ५ ॥

आंशिक सम्यक् दर्श अरु, ज्ञान चरण इकतान ।
मोक्ष मार्ग प्रारम्भ अरु, पूरण में निर्वान ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गाढ़ परम अवगाढ़ मय, तत्त्व रुची दृग मित्र ।
उनका अधिगम ज्ञान है, हेय त्याग चारित्र ॥ २ ॥
ये तीनों गुण किसी के, उपजें सहज स्वभाव ।
अथवा पर उपदेश से, उपजें युक्ति मिलाव ॥ ३ ॥
जीवाजीवरु आस्रवा, बन्धरु संवर मान ।
और निर्जरा मोक्ष युत, सात तत्त्व पहिचान ॥ ४ ॥
नाम थापना द्रव्य अरु, भाव निमित व्यवहार ।
नय प्रमाण से उन्हों का, ज्ञान होय निरधार ॥ ५ ॥
नाम स्वामि साधन सहित, अरु आधार वखान ।
स्थिति भेद प्रभेद से, उनका होवे ज्ञान ॥ ६ ॥
सत् संख्या युत क्षेत्र अरु, सपरस काल वखान ।
अन्तर भावरु अल्प वहु, इनसे उनका ज्ञान ॥ ७ ॥
मति श्रुत अवधी मनपरय, केवल सच्चे ज्ञान ।
मति श्रुत दोय परोक्ष हैं, शेष प्रत्यक्ष पिछान ॥ ८ ॥
स्मृति प्रत्यभिज्ञान अरु, तर्क सहित अनुमान ।
ये भी सब मति ज्ञान हैं, निश्चय करके जान ॥ ९ ॥
पन इन्द्रिय मन निमित से, मति की उत्पतिमान ।
अव ग्रह ईहाऽवाय अरु, धारण भेद पिछान ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहु इक बहुविध एकविध, शीघ्र देर कछु भान ।
अधिक प्रगट विन सुना अरु, सुना थिरांथिर जान॥११॥
इनमें व्यक्ताव्यक्त से, द्वादश द्वादश थान ।
व्यक्त द्रव्य का होत है, अव ग्रह आदिक ज्ञान ॥१२॥
और अव्यक्त जुद्रव्य का, केवल अव ग्रह ज्ञान ।
मन अरु चक्षू के विना, होता दीसे जान ॥१३॥
मति के पीछे होत है, जीवों के श्रुत ज्ञान ।
द्रव्य भाव से दोय विध, उसके भेद पिछान ॥१४॥
भव प्रत्यय जो अवधि है, सुर नारक के होय ।
गुण प्रत्यय अवधी छहों, नर अरु पशु के जोय ॥१५॥
मन पर्यय के भेद हैं, ऋजु अरु विपुल पिछान ।
ऋजु से विपुल विशुद्ध है, पतन रहित अरु जान॥१६॥
मनपर्याय विशुद्ध है, अवधी उससे हीन ।
क्षेत्र स्वामि अरु विषय में, मन पर्याय विहीन ॥१७॥
द्रव्यों की पर्याय कुछ, जाने मति श्रुत ज्ञान ।
अवधी रूपी को लखे, जिनवर देव वखान ॥१८॥
मन पर्यय उससे अधिक, सूक्ष्म ज्ञान लहाय ।
सबको युगपत् जो लखे, केवल ज्ञान कहाय ॥१९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मति श्रुत के संग हो सकें, अवधी मनपर्याय ।
केवल ज्ञान अखंड है, और अकेला थाय ॥२०॥
पहिले तीनों ज्ञान में, होते त्रय कुज्ञान ।
वे विवेक से हीन हैं, जिनवर देव वखान ॥२१॥
नय के दो ही भेद हैं, निश्चय अरु व्यवहार ।
इनमें शुद्धाशुद्ध से, दो दो और विचार ॥२२॥
नय अशुद्ध व्यवहार से, होय न सच्चा ज्ञान ।
अरु निश्चय नय शुद्ध से, होवे सच्चा ज्ञान ॥२३॥
नय अशुद्ध निश्चय तथा, और शुद्ध व्यवहार ।
इन दोनों से कथंचित्, सत्य ज्ञान निरधार ॥२४॥

* इति श्री तत्त्वार्थ सूत्र प्रथम अध्याय *

उपशम क्षायिक मिश्र अरु, औदायिक या और ।
परिणामिक मिल जीव के, पांच भाव सिर मौर ॥ १ ॥
उपशम समकित प्रथम अरु, उपशम चारित दूज ।
इस प्रकार दो भेद ये, उपशम के नित पूज ॥ २ ॥
ज्ञान दर्श सम्यक्त्व अरु, चरण लाभ अरु दान ।
वीर्य भोग उपभोग नव, क्षायिक भेद पिछान ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान चार अज्ञान त्रय, लब्धि पांच दृग तीन ।
संयम समकित देशव्रत, मिश्र अठारह चीन ॥ ४ ॥
लेश्या वेद कषाय गति, भ्रम अव्रत अज्ञान ।
सिद्ध रहित युत वीस इक, औदायिक के जान ॥ ५ ॥
जीवरु भव्य अभव्य त्रय, परिणामिक के मान ।
जीवत्वं निज भाव है, शेष उपाधिक जान ॥ ६ ॥
जिय का लक्षण मुख्य कर, उपयोगी इक मान ।
चउ दर्शन अठ ज्ञान से, दो विध उसको जान ॥ ७ ॥
जीव भेद सामान्य से, संसारी अरु मुक्त ।
त्रस अरु थावर भेद से, संसारी संयुक्त ॥ ८ ॥
भू जल अगिनी पवन तरु, थावर पंच प्रकार ।
लट चेंटी भौंरा मनुज, आदिक त्रस निरधार ॥ ९ ॥
सपरस रसना नासिका, दृग श्रव इन्द्रिय पान ।
द्रव्य भाव से इन्हों में, दो दो भेद पिछान ॥ १० ॥
निवृति और उपकरण को, द्रव्येन्द्रिय पहिचान ।
लब्धि और उपयोग को, भावेन्द्रिय पहिचान ॥ ११ ॥
और फरस रस गंध अरु, वर्ण शब्द को मान ।
पन इन्द्रिय के विषय ये, जिनवर देव वखान ॥ १२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थावर जीवनि के विषे, सपरस इन्द्रिय होय ।
क्रम से इक २ अधिक है, त्रस जीवनि के जोय ॥१३॥
मन युत सैनी, मन विना, शेष असैनी मान ।
मनका विषय विचार है, ऐसा निश्चय जान ॥१४॥
औदारिक अरु वैक्रियक, आहारक त्रय मान ।
अरु तैजस अरु कर्मतन, पांच शरीर पिछान ॥१५॥
औदारिक से आदि लग, कारमाण तक मान ।
आगे आगे सूक्ष्म हैं, किन्तू अणू महान ॥१६॥
क्रम से गुणि तीजे तलक, अणू असंख्य असंख्य ।
और अनंत अनंत गुणि, तीजे से निःशंक्य ॥१७॥
आहारक से अंत तक, गमन न रोके कोय ।
शेष रुके अरु नहिं रुके, जिन शासन से जोय ॥१८॥
दोय अन्त के भोग विन, शेष सहित हैं भोग ।
तैजस है विन योग के, शेष सहित हैं योग ॥१९॥
परभव गति में जीव के, कारमाण का जोड़ ।
उसकी अनु श्रेणी गती, मोड़ा या विन मोड़ ॥२०॥
मुक्ति जीव गति मोड विन, मोड़ा रहित प्रमाण ।
एकसमय अरु सहित का, चारसमय तक जान ॥२१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इक दो अथवा त्रय समय, अनाहार तहँ मान ।
पुनि जनमें उत्पाद या, गर्भ समूर्च्छन जान ॥२२॥
सचित अचित अरु मिश्र या, शीतउष्ण या और ।
ढकी खुली या मिश्र ये, योनि जनम के ठौर ॥२३॥
जरारु अन्डा पोत युत, गर्भ भेद ये तीन ।
मनुज जरा अरु सबनि से, उपजें पशू प्रवीन ॥२४॥
शेष पशू नर का जनम, सम्मूर्च्छन से होय ।
औपादिक से जनमते, देव नारकी दोय ॥२५॥
सर्व मनुज तिर्यंच के, औदारिक तन मान ।
सुर नारक तन वैक्रियक, जिनवर देव वखान ॥२६॥
किसी मुनी अग्नी पवन, पंचेन्द्रिय पशु कोय ।
चक्री अरु भू भोग के, कभी वैक्रियक होय ॥२७॥
किसी प्रमत मुनि के कभी, आहारक तन होय ।
वह होवे शुभ नियम से, शेष शुभाशुभ जोय ॥२८॥
तैजस भिन्नाभिन्न अरु, भिन्न शुभाशुभ मान ।
भिन्न किसी मुनि के कभी, उपजें लेउ पिछान ॥२९॥
इक अभिन्न तैजस द्वितिय, कारमाण तन मान ।
सब जीवों के आदि से, होते निश्चय जान ॥३०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आहारक अरु वैक्रियिक, तैज शुभाशुभ जान
ये नहि होवें एक के, ऐसा नियम पिछान ॥३१॥
सम्मूर्च्छन अरु नारकी, जीव नपुँसक मान
देव नपुँसक हैं नहीं, शेष वेद त्रय वान ॥३२॥
भोग भूमि सूचमजिया, सुर नारक जिन देव
इनकी आयु अखंड है, आदि नियम स्वयमेव ॥३३॥
शेष जियनि की अधिकतर, आयू खण्ड महान
निश्चय नय से किसी की, आयू खण्ड न जान ॥३४॥

* इति श्री तत्त्वार्थ सूत्र द्वितीय अध्याय *

अमित अलोकाकाश के, मध्य पवन त्रय थोक
वेष्टित पुरुषाकार के, नादि निधन यह लोक ॥ १ ॥
रत्न शर्करा वालुका, पंक धूम तम मान
भूमि महातम अधोथल, नीचे नीचे जान ॥ २ ॥
वहां तीस पच्चीस अरु, पन्द्रह दश अर तीन
एक लाख में पांच कम, और पांच बिल चीन ॥ ३ ॥
उनमें नारक वास है, घोर वेदना योग
अशुभ देह अरु वैक्रिया, अरु लेश्या संयोग ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लड़ें परस्पर वे वहां, तृतिय नरक तक और ।
असुर लडावें उन्हो को, ऐसा दुख प्रद ठौर ॥ ५ ॥
उनकी क्रम से आयु है, एक तीन अरु सात ।
दश सत्रह बाईस अरु, तेतिस सागर ज्ञात ॥ ६ ॥
मध्य लोक में जानना, द्वीप समुद्र अपार ।
वे चौड़े दुगुणा दुगुण, घेरे गोलाकार ॥ ७ ॥
जम्बु द्वीप उन मध्य में, मेरु नाभि है जास ।
एक लाख योजन तना, लम्बा चौड़ा खास ॥ ८ ॥
उसमें भरतरु हैमवत, हरि विदेह अरु रम्य ।
हिरण्यवत् ऐरावता, सात क्षेत्र मन गम्य ॥ ९ ॥
क्षेत्र विभाजक हिमवना, महा हिमावन मान ।
निषध नील रुक्मी शिखर, नाम कुलाचल जान ॥१०॥
ये क्रम से पर्वत सरब, सोना चांदीं अंग ।
ताया सोना नील मणि, सोना चांदी रंग ॥११॥
नीचे से ऊपर तलक, चौड़े कहे समान ।
जिनके तट में मणि लगीं, चित्र विचित्र महान ॥१२॥
उनपर पदम महा पदम, तिंगिच्छ केशर मान ।
महा पुण्डरी पुण्डरी, नाम सरोवर जान ॥१३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लम्बा योजन सहस इक, चौड़ा आधो मान ।
दश योजन गहराव है, पद्म ताल का जान ॥१४॥
उसके मध्य विषे कमल, इक योजन का मान ।
ताल कमल दुगुणा दुगुण, तिगच्छ तक पहिचान॥१५॥
श्री ह्री धृति कीर्ति अरु, बुधि लछमी इक पल्य ।
सामानिक परिषद् सहित, निवसे वहां निशल्य ॥१६॥
गंगसिन्धु रो रोहित, हरित और हरि कान्त ।
शीता शीतोदा तथा, नारी अरु नर कान्त ॥१७॥
सुवरण कूला रूपकुल, रक्ता रक्तो मान ।
ये चौदह नदियां बहें, उन तालों से जान ॥१८॥
हर युगलों में से प्रथम, पूर्व गामिनी मान ।
शेष गामिनी सर्व ही, पच्छिम दिश को जान ॥१९॥
गंगसिन्धु परिवार है, चउदश चउद हजार ।
शेष युगल वैदेह तक, द्विगुणा द्विगुण विचार ॥२०॥
पांचशतक योजन परें, छव्विस अरु छह भाग ।
चौड़ा भरतरु देह तक, द्विगुणा द्विगुणा लाग ॥२१॥
तीन दोय इक पल्य अरु, कोटि पूर्व सौ वीस ।
वीस वर्ष आयू परा, नर पशु भाषीईष ॥२२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रम से होवे आयु ये, प्रथम द्वितिय त्रय और ।
चौथा पंचम षट सहित, काल विषे सिरमौर ॥२३॥
वृद्धि हानि के रूप ये, पलटे भरत प्रसिद्ध ।
आयु हानि पन्द्रह वरस, पल्य तीन तक वृद्ध ॥२४॥
क्रम से इन छह काल की, थिति सुन भरत जु ठोर ।
चार तीन दो सागरा, कोड़ा कोड़ी और ॥२५॥
सहस बियालिस कम करो, कोड़ा कोड़ी शीश ।
सहस वर्ष इक्कीस अरु, सहस वर्ष इक वीश ॥२६॥
हिमवत तीजा द्वितिय हरि, प्रथम देव कुरु मान ।
चतुरथ काल विदेह में, सदा अवस्थित जान ॥२७॥
जैसा यह वर्णन किया, दक्षिण दिश का मान ।
तैसा का तैसा सरव, उत्तर दिश का जान ॥२८॥
चौथे से छट्टे तलक, कर्म भूमि पहिचान ।
पहिले से तीजे तलक, भोग भूमि पहिचान ॥२९॥
कर्म भूमि में अल्प वय, अन्तर मुहुरत मान ।
भोग भूमि में किसी की, आयू अल्प न जान ॥३०॥
धात खण्ड पुस्कर अरध, रचना दूनी मान ।
काल समान रु क्षेत्र की, चौड़ाई न समान ॥३१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ढाई द्वीप में मनुज हों, आर्य मलेच्छ कहान ।
क्षेत्र कर्म से उन्हों में, दो दो भेद पिछान ॥३२॥
आर्य क्षेत्र जन्मे मनुज, क्षेत्र आर्य हैं मान ।
म्लेच्छ क्षेत्र जन्मे मनुज, क्षेत्र मलेच्छ पिछान ॥३३॥
ब्राह्मण क्षत्री अरु वनिक, कर्म आर्य पहिचान ।
पूजादिक षट कर्म के, ये अधिकारी मान ॥३४॥
हिंसक कर्म मलेच्छ हैं, निश्चय करके मान ।
क्षत्रि पदापद धार हैं, शेष अपद धर जान ॥३५॥

* इति श्री तत्त्वार्थ सूत्र तृतीय अध्याय *

प्रथम भवन वासी दुतिय, व्यंतर ज्योतिस तीन ।
कल्प वासि चौथे कहे, मुख्य भेद सुर चीन ॥ १ ॥
असुर नाग विद्युत गरुड', द्वीप अग्नि अरु वायु ।
मेघउदधि अरुदिग कुमर, भवन भेद दश गायु ॥ २ ॥
किन्नर किमजन महौरग, अरु गंधर्व पिशांच ।
भूत यक्ष राक्षस सहित, व्यंतर भेद जुसांच ॥ ३ ॥
सूर्य चन्द्र अरु ग्रह नखत, तारे और पिछान ।
ज्योतिसियों के भेद ये, जिनवर देव वखान ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ढाई द्वीप के मेरु की, देते फेरी मान ।
जिससे समय विभाग है, बाहिर के थिर जान ॥ ५ ॥
कल्प पन्न अरु द्वितिय है, कल्पातीत पिछान ।
कल्प वासि के भेद ये, जिनवर देव वखान ॥ ६ ॥
इन्द्र इन्द्रवत् सभासद्, तेतीसा जगपाल ।
सैनिक बाहन दास तन, प्रजा नीच दश माल ॥ ७ ॥
कल्पपन्न पद भेद ये, तैसे भवन पिछान ।
तेतीसा जगपाल विन, व्यंतर ज्योतिस थान ॥ ८ ॥
पशु में सिंह प्रतीन्द्र अरु, नर में चक्री इन्द्र ।
भवनरु व्यंतर भेद में, दो दो इन्द्र प्रतीन्द्र ॥ ९ ॥
ज्योतिस देवो के विषें, केवल दो ही इन्द्र ।
चन्द्र इन्द्र अरु दूसरा, है सूरज प्रति इन्द्र ॥१०॥
कल्पपन्न आद्यंत के, दो दो युगल मझार ।
चउ चउ इन्द्र प्रतीन्द्र हैं, दो दो शेष विचार ॥११॥
कल्पोपन्न विमान हैं, सौधर्मरु ईशान ।
सनतकुमार महेन्द्र अरु, ब्रह्म ब्रह्मतर जान ॥१२॥
लांतव कापिट शुक्र अरु, महाशुक्र सातार ।
सहस्रार आनत प्रणत, आरण अच्युत लार ॥१३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसी तरह तेईस्स हैं, कल्पातीत विमान ।
नव ग्रैवक नव अनुदिशा, पन पंचोत्तर जान ॥१४॥
ऊपर ऊपर मेरु से, सिद्ध शिला तक मान ।
इन दोनों के बीच में, निवसे सर्व विमान ॥१५॥
आयु तेज सुख कान्ति अरु, लेश्या सुद्धी थान ।
इन्द्रिय ज्ञान रु अवधिसे, उपरि २ अधिकान ॥१६॥
गति शरीर अरु उपधि मद्, नीचे नीचे हीन ।
इस प्रकार देवों विषे, अन्तर जिनवर चीन ॥१७॥
अनुदिश से अपरा तलक, त्रय भव तारी जान ।
सर्वारथ सिध के सरव, इक भव तारो जान ॥१८॥
नीचे से ईशान तक, करें काय से भोग ।
अरु महेन्द्र तक फरस अरु, अठ तक रूप नियोग॥१९॥
सहस्त्रार तक शब्द अरु, अच्युत याद करान ।
अरु आगे के याद भी, करते कभी न जान ॥२०॥
भवनत्रय में पीत तक, होवे लेश्या थान ।
कल्प विषे माहेन्द्र तक, लेश्या पीत पिछान ॥२१॥
सनत उपरि सहस्त्रार तक, लेश्या पद्म प्रमान ।
शुक्र उपरि से अन्त तक, लेश्या शुक्ल पिछान ॥२२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्रह्म स्वर्ग ऊपर वसे, लौकान्तिक सब देव ।
जाति भेद इनके कहूँ, जो भाषे जिन देव ॥२३॥
सारस्वत आदित्य अरु, वन्हि अरुण गद तोय ।
तुषितरु अव्याबाध युत, अरु अरिष्ट को जोय ॥२४॥
ब्रह्मचारि ये सर्व अरु, इक भव तारी मान ।
इनकी वय अपरा परा, अठ सागर की जान ॥२५॥
इक सागर वय असुर की, और नाग त्रय पल्य ।
गरुड़ अढ़ाई द्वीप द्वय, शेष अर्ध इक पल्य ॥२६॥
व्यन्तर ज्योतिस आयु है, एक पल्य कुछ वाढ़ ।
सौधर्मरु ईशान की, दो सागर कुछ वाढ़ ॥२७॥
शेष युगल में सात दश, चौदह षोडस मान ।
अष्टादश से कुछ अधिक, वीस वीस द्वय जान ॥२८॥
नव ग्रैवक इक इक अधिक, तेइस से इकतीस ।
अनुदिश में वत्तीस अरु, शेषनि में तेतीस ॥२९॥
व्यन्तर भवनरु प्रथम थल, लघुवय दश हज्जार ।
ज्योतिस की उत्कृष्ट से, अठवें भाग विचार ॥३०॥
सौधर्मरु ईशान में, एक पल्य कुछ ऊप ।
शेष जु अपराजित तलक, अब सुन जैसा रूप ॥३१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्व पूर्व उत्कृष्ट ही, परे परे लघु मान ।
अरु द्वितियादिक नरक में, यही रीत पहिचान ॥३२॥
अधोलोक में भवन थल, सात कोटि अधिकान ।
लाख बहत्तर जिन भवन, तहांअकृत्रिय जान ॥३३॥
मध्यलोक में मेरु से, रुचिक द्वीप तकमान ।
अट्ठावन अरु चार शत, वहां जिनालय जान ॥३४॥
ऊर्धलोक में कल्प थल, लाख असी अरु चार ।
नब्बे सात हजार अरु, ऊपर तइस धार ॥३५॥
अधोमध्य व्यंतर भवन, मध्य ज्योतिसी थान ।
संख्या रहित जिनेश गृह, निचश्य करके जान ॥३६॥
सुर नर नारक छोड़कर, शेष सर्व पशु थोक ।
थावर निवसे सर्व थल, त्रस पशु इस हो लोक ॥३७॥

* इति श्री तत्त्वार्थ सूत्र चतुर्थ अध्याय *

धर्माधर्माकाश अरु, पुद्गल जीव प्रवीन ।
बहुत प्रदेशी द्रव्य सब, निज निज रूप तलीन ॥ १ ॥
जीव सचेतन अन्य सब, चेतन शक्ति विहीन ।
पुद्गल रूपी अन्य सब, बिना रूप के चीन ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नभ तक इक इक द्रव्य है, और क्रिया बिन मान ।
शेष अनेकरु सक्रिया, निश्चय करके जान ॥ ३ ॥
धर्माधर्मरु एक जिय, संख्या रहित प्रदेश ।
नभ के ऽनंत प्रदेश हैं, ऐसा जिन उपदेश ॥ ४ ॥
संख्य असंख्य अनंत हैं, पुद्गल विषे प्रदेश ।
अणु के एक प्रदेश है, ऐसा जिन उपदेश ॥ ५ ॥
इन पांचों ही द्रव्य का, लोकाकाश निवास ।
और द्रव्य धरमाधरम, व्यापे सब जग खास ॥ ६ ॥
पूरण गलन स्वभाव से, अणु या पुद्गल रास ।
इक प्रदेश से आदि ले, सब जग करें निवास ॥ ७ ॥
अंगुल भाग असंख्य से, सर्व लोक जिय वास ।
संकोचन विस्तार गुण, इन प्रदेश में खास ॥ ८ ॥
धर्माधर्म हि द्रव्य का, है गति थिति उपकार ।
थान दान उपकार है, नभ का लेउ विचार ॥ ९ ॥
तन मन वाणी सहित अरु, श्वांसोश्वांस सँभार ।
सुख दुख जीवन मरण ये, पुद्गल के उपकार ॥१०॥
धर्मादिक उपकार वत्, करें जीव भी मान ।
वे करते हैं अन्य को, जीव जीव को जान ॥११॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काल अचेतन द्रव्य है, रूप न द्वितिय प्रदेश।
नित्यानित्य स्वरूप है, अरु है निष्क्रिय भेष ॥१२॥
रत्न राशि वत् वास है, अमित समय दातार।
नव जीरण परिणमन हीं, उसका है उपकार ॥१३॥
फर्श वर्ण रस गंध से, पुद्गल लेउ पिछान।
अणू और स्कंध हैं, उसके भेद प्रधान ॥१४॥
थूलथूल इक थूल द्वय, थूलसूक्ष्म त्रय मान।
सूक्ष्मथूल चउ सूक्ष्म पन, अति सूक्ष्म छै जान॥१५॥
भेद और संघात से, खंद उपज पहिचान।
अंत भेद से अणू की, उपज कही भगवान ॥१६॥
चक्षू गोचर आदि त्रय, भेद और संघात।
चौथे का चक्षू विना, शेष अगोचर जात ॥१७॥
चिकन रूक्ष से उन्हों में, होवे बंध महान।
इक गुण और समान गुण, मिलें न बंध पिछान ॥१८॥
दो गुण अधिके जब मिले, तब ही बंध स्वरूप।
बंध भये पर बहु गुणो, करते अपने रूप ॥१९॥
छहों द्रव्य ये सर्व ही, हैं गुण पर्यय वान।
गुण द्रव्यों में नित रहें, गुण में गुण मत जान ॥२०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्य रु गुण जो परणवे, सो पर्याय पिछान ।
वह अनित्य अरु द्रव्य गुण, सदा शाश्वते मान ॥२१॥
सत् लक्षण ही द्रव्य का, मुख्य कहा भगवान ।
व्ययउतपतिअरु ध्रुव सहित,सत्कालक्षणमान॥२२॥
ये स्वभाव द्रव्यों विषे, विद्यमान नित मान ।
मुख्य गोण कर वे धर्म, सिद्ध किये भगवान ॥२३॥

* इति श्री तत्त्वार्थ सूत्र पांचवां अध्याय *

मन वच तन की क्रिया ही, योग रु आस्रव मान ।
शुभ से पुण्य रु अशुभ से, पापास्रव पहिचान ॥ १ ॥
पुण्यास्रव के भेद द्वय, भासे देव विराग ।
प्रथमसहितअनुभागतिथि,अरुबिनथितिअनुभाग॥२॥
सहित थिती अनुभाग में, कारण है शुभराग ।
रहित थिती अनुभाग में, कारण योग विराग ॥ ३ ॥
पापास्रव का हेत है, अशुभ राग अरु द्वेष ।
पूर्ण हुआ सामान्य वच, अब सुन भेद विशेश ॥ ४ ॥
समरँभ आरँभ समारँभ, मन वच तन कृतकार ।
अनुमति अरु क्रोधादि से, गुणे होंहि सो टार ॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीव्र भाव प्राणी करे, तव आस्रव बहु चीन ।
मंद् भाव प्राणी करे, तव आस्रव हो हीन ॥ ६ ॥
तत्त्व विषे ईर्षा अरुचि, विघन दोष छल रोक ।
ज्ञान दर्शनावरणि का, आवे आस्रव थोक ॥ ७ ॥
शोक ताप विल्लाप अरु, रुदन रु आतम घात ।
होय असाता कर्म का, आस्रव श्रुत विख्यात ॥ ८ ॥
जीव दया त्यागी भगति, दान रु संयम वान ।
कुछ संयम निर्लोभ पन, साता आस्रव जान ॥ ९ ॥
सत्य देव गुरु शास्त्र अरु, धर्म जु निंदे कोय ।
उसके दर्शन मोह का, आस्रव निश्चय होय ॥१०॥
अरु कषाय के उदय से, चरण मोह का मान ।
बहु आरंभ रु उपधि से, नरक आयु का जान ॥११॥
माया चारी भाव से, तिर्यग आयू मान ।
अल्पारंभ रु उपधि से, मानुष आयू जान ॥१२॥
संयम अथवा देश व्रत, अरु निर्जरा अकाम ।
समकित अरु तप वाल से, सुर आयु विश्राम ॥१३॥
भोगभूमि नर पशू के, सरल भाव से मान ।
आस्रव होवे नियम से, देव आयु का जान ॥१४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आयु बँधे सुर नरक में, माया से तिर्यंच ।
सरल भाव सम्यक्त्व से, मनुज आयु सिरपंच ॥१५॥
आस्रव अशुभ जु नाम का, कुटिल योग से होय ।
अरु आस्रव शुभ नाम का, सरल योग से जोय ॥१६॥
दर्शन शुद्धी विनय अरु, शील सु व्रत विन दाग ।
सतत् ज्ञान संवेग अरु, यथा योग तप त्याग ॥१७॥
साधु समाधी सहित अरु, कर वैयाव्रत शक्ति ।
अरहत अरु आचार्य अरु, वहु श्रुत प्रवचन भक्ति॥१८॥
आवश्यक पालन सहित, मार्ग प्रभावन जोय ।
वात शल्य युत भाव से, तीर्थंकर पद होय ॥१९॥
पर निंदा अरु आप की, करे प्रशंसा कोय ।
नीच गोत्र का उसी के, आस्रव निश्चय होय ॥२०॥
निज निंदा अरु अन्य की, करे प्रशंसा कोय ।
ऊँच गोत्र का उसी कें, आस्रव निश्चय होय ॥२१॥
जो धर्मी अरु धर्म में, विघन मचावे कोय ।
अन्तराय का उसी के, आस्रव निश्चय होय ॥२२॥

* इति श्री तत्त्वार्थ सूत्र पष्टम अध्याय *

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राण घात परमाद वश, हिंसा उसको मान ।
मृषा वचन मुख से खुले, सत्य न उसको जान ॥ १ ॥
बिना दिया लेवे कछू, चोरी उसको मान ।
मैथुन कर्म कुशील है, मूर्च्छा परि ग्रह जान ॥ २ ॥
पापास्रव के हेतु ये, इन्हें विरत व्रत मान ।
दृढ़ करने की भावना, पंच पंच पहिचान ॥ ३ ॥
मन वच गुप्ती गति समिति, अरु आदान निक्षेप ।
शोधित भोजन भावना, प्रथम दया व्रत लेप ॥ ४ ॥
क्रोध लोभ भय हास्य अरु, करकस वच परिहार ।
ये पांचो ही भावना, द्वितिय सत्य व्रत सार ॥ ५ ॥
सून्य वास रोके न पर, भिक्षा भोजन और ।
पर श्रुत गहे न वाद पर, व्रत अचौर्य सिर मौर ॥ ६ ॥
नारि कथा तन देखना, पूर्व भोग सुमिराय ।
पौष्टिक रस श्रंगार बिन, ब्रह्मचर्य व्रत गाय ॥ ७ ॥
पंचेन्द्रिय के विषय में, राग द्वेष परिहार ।
उपधि रहित व्रत भावना, पांचो लेउ निहार ॥ ८ ॥
सब मैत्री गुण भक्ति दुख, करुणा शठ मध्यस्थ ।
लोक देह का चिन्तवन, ये भावना समस्त ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन सब युत अरु शल्य बिन, व्रतधारी वड़भाग ।
वे मुनि श्रावक उन्हों में, श्रावक ग्यारह भाग ॥१०॥
दर्शन व्रत पूजन तथा, अरु चौथी स्वाध्याय ।
सचित त्याग अरुप्रतिक्रमण, सप्तम ब्रह्म कहाय ॥११॥
और त्याग आरंभ अरु, परि ग्रह अनुमति त्याग ।
भिक्षाहार मिलाय के, ग्यारह प्रतिमा भाग ॥१२॥
महाव्रती मुनि अव्रती, दर्शन प्रतिमा वान ।
शेष जु प्रतिमा वान सब, देश व्रती पहिचान ॥१३॥
अणु व्रत पांच प्रकार अरु, गुण व्रत तीन प्रकार ।
शिक्षा व्रत चारों सहित, देश व्रती व्रत सार ॥१४॥
सहित गाढ़ सम्यक्त्व अरु, बिन पन पन अतिचार ।
व्रत व्रत कहलाते सदा, पालो निर अतिचार ॥१५॥
शंका कांक्षा ग्लानि अरु, निंदा सत् दृग वान ।
इतर प्रशंसा रहित ही, समकित गाढ़ महान ॥१६॥
वध बन्धन अरु छेदना, लादे अति का भार ।
अल्प अशन से रहित ही, अहिंसाणुव्रत सार ॥१७॥
लिखे झूंठ मेटे जमा, चुगली गुप्त वखान ।
मिथ्या भाषण रहित ही, सत्य अणु व्रत जान ॥१८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चोर मिले चोरी गहे, तोल माल में कोष ।
नृप आज्ञा लोपन रहित, अचौर्याणु व्रत पोष ॥१९॥
पर विवाह अति काम रुचि, अनंग क्रीड़ा दोष ।
पर तिय वेश्या घर गमन, रहित ब्रह्म व्रत पोष ॥२०॥
सोना–चांदी धान्य–धन, थल–घर दासी–दास ।
पट-वर्तन मर्याद युत, उपधि नियम व्रत खास ॥२१॥
अधो ऊर्ध लंघे दिशा, लेवे क्षेत्र बढ़ाय ।
अवधि भूलसे रहित ही, दिग् व्रत को जिन गाय ॥२२॥
विट चेष्टा बकवाद अरु, अति संचय वच भंड ।
योग वक्रता रहित हो, है व्रत अनरथ दंड ॥२३॥
विषय राग गत स्मरण, तृष्ण वांछा भोग ।
मिथ्या अनुभव रहित ही, नेम भोग उप भोग ॥२४॥
नर भेजे या शब्द कर, आंख हाथ की सेन ।
कंकर फेंकन रहित ही, कहा देश व्रत ऐन ॥२५॥
मन वच तन चंचल करे, करे पाठ में भूल ।
समय अनादर रहित हो, सामायिक व्रत मूल ॥२६॥
अति भोजन आरंभ अरु, निद्रा विकथा वास ।
जल आदिक उपचार से, रहित जु व्रत उपवास ॥२७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वांछा लज्जा मान वश, अर्पित वस्तू चार ।
क्रिया भूल से रहित ही, वैयावृत व्रत सार ॥२८॥
इस सिवाय पर अर्थ धन, दिया दान भी मान ।
यथा द्रव्य विधि दातृ अरु, पात्र तथा फल जान ॥२९॥
इस प्रकार व्रत पाल कर, अन्त समाधी धार ।
व्रत जु सफल उसने किये, चहुँ गति पानीडार ॥३०॥
इच्छे जीवन मरण अरु, सुख स्मरण निदान ।
मित्र भेंट इच्छा रहित, संलेखन व्रत जान ॥३१॥

* इति श्री तत्त्वार्थ सूत्र सप्तम अध्याय *

मिथ्या दर्शन अरु तथा, अविरति योग कषाय ।
इनसे पुद्गल ग्रहण हो, वही बंध कहलाय ॥ १ ॥
प्रकृति देश अनुभाग थिति, बंध भेद ये चार ।
अरु आवरण स्वभाव को, प्रकृति बंध निरधार ॥ २ ॥
ज्ञान दर्शनावरण अरु, वेदनीय अरु मोह ।
आयु नाम अरु गोत्र अरु, अंतराय अठ खोह ॥ ३ ॥
मति श्रुत अवधी वरण युत, मनपर्यय मन छेद ।
केवल ज्ञानावरण युत, ज्ञानावरणी भेद ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्षु अचक्षू अवधि अरु, केवल दर्शन घात।
निद्रा अरु प्रचला सहित, निद्रानिद्रा सात ॥ ५ ॥
प्रचलाप्रचला सहित अरु, थानगृद्धि नव मान।
प्रकृति दर्शनावरण की, जिनवर देव वखान ॥ ६ ॥
साता प्रकृति जु प्रथम अरु, द्वितिय असाता मान।
वेदनीय की प्रकृति ये, जिनवर देव वखान ॥ ७ ॥
नादि बंधनी चार अरु, चार अप्रत्याख्यान।
प्रत्याख्यान की चार अरु, चार संज्वलन मान ॥ ८ ॥
हास्य अरति रति शोक भय, ग्लानि वेद पच्चीस।
मिथ्या समकित मिश्र मिल, मोह प्रकृति अठ वीस॥९॥
नर नारक तिर्यंच युत, देव आयु अरु मान।
आयु कर्म की प्रकृति ये, जिनवर देव वखान ॥१०॥
फरस आठ अरु गंध दो, वरण पांच रस पांच।
संसथान छह चार गति, अरु सँहनन छह वांच ॥११॥
पन बन्धन संघात पन, पन इन्द्रिय तन पांच।
पूर्वी चारों चाल दो, अंग–पांग त्रय जांच ॥१२॥
साधारण प्रत्येक अरु, त्रस अरु थावर मान।
अनादेय आदेय थिर, अथिर अशुभशुभ जान ॥१३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उद्योत रु आताप यश, अयश और उपघात ।
अपर्याप्त पर्याप्त अरु, थूल सूक्ष्म परघात ॥१४॥
सुभग रु दुरभग स्वर दुस्वर, तीर्थंकर निर्माण ।
श्वासोश्वांस रु अघुरुलघु, नाम त्रानवे जान ॥१५॥
ऊँच नीच कुल जनम से, उदय ऊँच अरु नीच ।
तिसके ही दो भेद हैं, गोत्र कर्म के बीच ॥१६॥
लाभ भोग उपभोग अरु, वीर्य तथा अरु दान ।
अंतराय की प्रकृति ये, जिनवर देव वखान ॥१७॥
नाम गोत्र अरु आयु शुभ, वेदनीय शुभ मान ।
पुण्य प्रकृति अरु शेष सव, पाप प्रकृति पहिचान ॥१८॥
जिय प्रदेश में प्रकृति की, जो थिति निश्चित आन ।
उस स्थिति का नाम है, स्थिति बंध पिछान ॥१९॥
आदि तीन इक अन्त की, थिति उत्कृष्ट जु मान ।
तीस जु कोड़ा कोड़िया, सागर की पहिचान ॥२०॥
अरु सत्तर है मोह की, नाम गोत्र की बीस ।
तेतिस सागर आयु की, थिति भाषी जगदीश ॥२१॥
वेदनीय की अल्प थिति, द्वादश मुहुरत मान ।
नाम नोत्र की अल्प थिति, आठ महूरत जान ॥२२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्तर मुहुरत अल्प थिति, शेष कर्म की मान ।
इस प्रकार का कथन सब, जिनवर देव वखान ॥२३॥
फल देने की शक्ति को, कहें बंध अनुभाग ।
जैसा जिसका नाम है, तैसा फल दे भाग ॥२४॥
अष्ट करम के हेतु पुनि, योग क्रिया से और ।
नन्तानन्त जु वरगणा, आवे आतम ठौर ॥२५॥
उसको ही जिनवर कहा, बन्ध प्रदेश महान ।
वह होता है प्रति समय, सब जीवों के जान ॥२६॥

* इति श्री तत्त्वार्थ सूत्र अष्टम् अध्याय *

आस्रव भाव निरोध से, निश्चय संवर होय ।
वह मुनियों के मूल अरु, उत्तर गुण से जोय ॥ १ ॥
व्रत समिती इन्द्रिय विजय, लौंचावश्यक नग्न ।
न्हान न दतवन भू शयन, खड़े भुक्ति इक लग्न ॥ २ ॥
ईर्या भाषा ऐषणा, अरु आदान निक्षेप ।
प्रतिष्ठापना सहित ये, समिती पंच विलेप ॥ ३ ॥
सामायिक थुति वन्दना, प्रतीक्रमण स्वाध्याय ।
कायोत्सर्ग मिलाय के, आवश्यक छह गाय ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रय गुप्ती दश धर्म युत, अनुपेक्षा अरु और ।
परिषह जय चारित्र युत, उत्तर गुण सिर मौर ॥ ५ ॥
काय योग मन योग अरु, वचन योग त्रय मान ।
इनका निग्रह भली विध, सोही गुप्ती जान ॥ ६ ॥
उत्तम क्षमा रु मारदव, आर्जव अरु शौचर्य ।
सत्य रु संयम त्याग तप, आकिंचन ब्रह्मचर्य ॥ ७ ॥
सब अनित्य अशरण सरव, संसार रु एकत्व ।
अन्य पना अरु अशुचि पन, आस्रव संवर तत्त्व ॥ ८ ॥
और निर्जरा लोक अति, दुर्लभ वोधि रु धर्म ।
चिंतो द्वादश भावना, तज कर मिथ्या कर्म ॥ ९ ॥
परीषहों के सहें से, मारग बृद्धि होय ।
और निर्जरा होय सब, शेष जिनागम जोय ॥१०॥
क्षुधा तृषा शीतोष्ण अरु, दंश मशक पहिचान ।
नग्न अरति नारी तथा, चर्या आसन मान ॥११॥
शय्या कर्कश वचन वध, तृण स्पर्श सँमार ।
मल याचना अलाभ अरु, पुरस्कार–सत्कार ॥१२॥
प्रज्ञा अरु अज्ञान ।
अदर्शन सहित अरु,
परिषह सब वाईस ये, जिनवर देव वखान ॥१३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणस्थान नवमें तलक, सर्व परीषह मान ।
दशमें से द्वादश तलक, चउदा लेउ पिछान ॥१४॥
तेरह में गुण थान में, परिषह ग्यारा लेख ।
होंहि न केवल कथन है, उदय वेदनी देख ॥१५॥
ज्ञानावरणी उदय से, प्रज्ञा अरु अज्ञान ।
परिषह दर्शनवरण से, होय अदर्शन जान ॥१६॥
अन्तराय के उदय से, लाभ न होवे कोय ।
इस प्रकार का कथन सब, जिनवर मत से जोय ॥१७॥
नग्न अरति आसन तिया, याचन करकश वैन ।
पुरसकार–सतकार ये, चरण मोह से ऐन ॥१८॥
वेदनीय के उदय से, शेष परीषह मान ।
पूर्वापर न विरोध है, इस कथनो में जान ॥१९॥
एक समय इक जीव के, परिषह का परिमान ।
इक से ले उन्नीस तक, हो सकती पहिचान ॥२०॥
प्रथम भेद जिनवर कहा, सामायिक अति शुद्ध ।
अरु छेदोपस्थापना, अरु परिहार विशुद्ध ॥२१॥
सूक्ष्म सांपरायिक तथा, यथाख्यात अरु मान
ये चारित के भेद पन, जिनवर देव वखान ॥२२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इच्छा रोधन मूल तप, वही निर्जरा कार ।
बाह्याभ्यंतर भेद दो, उस के लेउ निहार ॥२३॥
अनशन ऊंनोदर तथा, व्रत संख्या रस ढाय ।
विवक्त शय्यासन सहित काय क्लेश तप बाह्य ॥२४॥
प्रायश्चित अरु विनय गुण, वैयाव्रत स्वाध्याय ।
व्युतसर्गा अरु ध्यान ये, आभ्यंतर तप गाय ॥२५॥
आलोचन अरु प्रति क्रमण, तदुभय रस परित्याग ।
अनशन कायोत्सर्ग अरु, दीक्षा छेद विभाग ॥२६॥
और संग परिहार अरु, उपस्थापना और ।
प्रायश्चित नव भेद ये, जिन भाषे सिर मौर ॥२७॥
दर्शन विनय प्रधान युत, ज्ञान चरण उपचार ।
चार भेद ये विनय के, जिनमत में निरधार ॥२८॥
नमस्कार जयकार अरु, पग मलना मुनि वर्ग ।
निश दिन गुण अनुराग वहु, अरु हरना उपसर्ग ॥२९॥
औषध सुध आहार अरु, थान दान श्रुति दान ।
पिछी कमंडल आदि दश, वैयावृत के थान ॥३०॥
पठन सुनन अरु चिन्तवन, प्रश्नोत्तर जु कराय ।
धर्म देशना सहित ये, पांच भेद स्वाध्याय ॥३१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाह्य कमंडल पिछी अरु, शास्त्र संग मुनि वर्ग
आभ्यंतर अनुराग युत, दोय भेद व्युतसर्ग ॥३२॥
एक विषय में चित्त का, रुक जाना सो ध्यान
अन्तर मुहुरत तक रहे, वह शुभ सँहनन थान ॥३३॥
आर्त्त रौद्र अरु धर्म अरु, शुक्ल चार ये ध्यान
आदि दोय भव हेतु हैं, शेष हेतु निर्वाण ॥३४॥
पहिला इष्ट वियोग है, अरु अनिष्ट संयोग
पीड़ा चिन्त निदान युत, कहे आर्त्त भव भोग ॥३५॥
आर्त्त ध्यान त्रय आदि के, प्रमत विरत तक मान
देश विरत तक जातु है, चौथा भेद निदान ॥३६॥
हिंसा मृषा रु चौरिया, पर ग्रह नंदी मान
रौद्र ध्यान के भेद ये, देश विरत तक जान ॥३७॥
आज्ञा विचय अपाय विच, और जु विचय विपाक
संसथान चिन्तन सहित, धर्म ध्यान जिन वाक॥३८॥
गुणस्थान चौथे विषे, होहि आदि के दोय
आगे इक इक बृद्धि कर, सप्तम में सब जोय ॥३९॥
प्रथम प्रथक्त्व वितर्क है, अरु एकत्व वितर्क
सूक्ष्म क्रिया व्युपरत क्रिया, शुक्ल ध्यान चउ अर्क॥४०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अष्टम से ग्यारम तलक, प्रथम ध्यान ही होय ।
द्वादश से चौदम तलक, क्रम से इक इक जोय ॥४१॥
प्रथम विभिन्न विचार युत, साथ पूर्ण श्रुत ज्ञान ।
दूजा रहित विचार है, शेष सहित विज्ञान ॥४२॥
तीन योग युत प्रथम अरु, दूजा कोई योग ।
काय योग युत तीसरा, चौथा है बिन योग ॥४३॥
मिश्र प्रमत मिथ्यात बिन, शेष चढ़त गुण थान ।
अन्तर मुहुरत काल तक, उन जीवों के जान ॥४४॥
अगणित अगणित प्रति गुणी, तहां निर्जरा होय ।
संख्य संख्य नित निर्जरा, अन्तराल में जोय ॥४५॥
मिथ्यातम् सासादना, मिश्र रु अविरत देश ।
प्रमताप्रमत अपूर्व अरु, अनि वृति सूक्ष्म भेष ॥४६॥
उपशान्ता अरु क्षीण गुण, और सयोग अयोग ।
गुणस्थान ये चौदहा, क्रम से करो वियोग ॥४७॥
शुद्ध रु शुभ उपयोग से, जिन मुनि दोय प्रकार ।
शुद्धास्त्रव से रहित हैं, शुभ आस्त्रव के धार ॥४८॥

* इति श्री तत्त्वार्थ सूत्र नवमां अध्याय *

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोह नाश पश्चात् ही, अन्तराय क्षय खास ।
ज्ञान दर्शनावरण क्षय, केवल ज्ञान प्रकाश ॥ १ ॥
इन चारों के नाश से, भाव मोक्ष कहलाय ।
शेष कर्म के नाश से, द्रव्य मोक्ष प्रकटाय ॥ २ ॥
इनके इक जीवत्व अरु, क्षायिक भावनि छोड़ ।
शेषनि का सद् भाव नहि, ऐसा सत दृग जोड़ ॥ ३ ॥
पीछे उस जड़ देह से, कुछ कम पुरुषाकार ।
कढ़ि प्रदेश शुद्धात्म के, निवसें जग पग धार ॥ ४ ॥
उसमें पूर्व प्रयोग अरु, संग रु बंध अभाव ।
ऊरध गमन स्वभाव के, कारण ऊपर जाव ॥ ५ ॥
चाक फिराया फिरे अरु, तूंबी लेप विहीन ।
चटके अण्डी लो अगिनि, चार उदारण चीन ॥ ६ ॥
पूर्व प्रयोग समाप्त अरु, धर्म जु द्रव्य अभाव ।
आगे गमन न होय यह, कहें केवली राय ॥ ७ ॥
गति द्विज सँहनन नर नगिन, समकित चारित्र ज्ञान ।
इन आठों से भेद नहि, सिद्धजियों में जान ॥ ८ ॥
किन्तु क्षेत्र अरु काल या, आयू काया मान ।
आसन संख्या लिङ्ग अरु, संसथान पहिचान ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बोधित अन्तर तीर्थ अरु, अल्प बहुत्व प्रमाण ।
इन द्वादश से भेद है, सिद्धजियों में जान ॥१०॥

इक सौ बारह कोटि में, लाख तिरासी जोड़ ।
सहस अठावन पांच पद, श्रुत वन्दो भव तोड़ ॥ १ ॥

तत्त्व ज्ञान अरु दया को, तप संयम व्रत धार ।
संलेखन फिर धार कर, चहुँ गति पानी डार ॥ २ ॥

प्रबल शक्ति साधन करो, शेष करो सरधान ।
इम सरधानी जिय लहें, अजर अमर पद थान ॥ ३ ॥

इस तत्त्वारथ सूत्र के, पढ़े दशों अध्याय ।
इक प्रोषध उपवास का, वह प्राणी फल पाय ॥ ४ ॥

जिन मत से न विरोध है, पूर्वापर न विरोध ।
यदि भासे तो संत जन, कर लीजो अविरोध ॥ ५ ॥

* इति श्री तत्त्वार्थ सूत्र दशमां अध्याय *

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

* श्री वीतरागायनमः *

* श्री महा मुनि क्षीरसागर प्रणीत *

* लघु तत्त्वार्थ सूत्र *

(दोहा वली)

सत दृग ज्ञान रु चरण युत, मोक्ष मार्ग प्राचीन ।
जिन की ध्वनि से प्रगट यह, तिन वन्दों गुण पीन ॥

आंशिक सभ्यकदर्श अरु, ज्ञान चरण इक तान ।
मोक्ष मार्ग प्रारम्भ अरु, पूरण में निर्वाण ॥ १ ॥
तत्त्वों की रुचि दृग प्रकट, उपजें सहज स्वभाव ।
अथवा पर उपदेश से, उपजे युक्ति मिलाव ॥ २ ॥
सात तत्त्व जीवादि हैं, नामादिक व्यवहार ।
नय प्रमाण से उन्हों का, ज्ञान होय निरधार ॥ ३ ॥
मति से केवल ज्ञान तक, सर्व प्रमाणिक ज्ञान ।
पहिले दोय परीक्ष हैं, शेष प्रत्यक्ष पिछान ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीन शतक छत्तीस हैं, मति के भेद प्रभेद ।
श्रुत के दो छह अवधि के, मन पर्यय दो भेद ॥ ५ ॥
मति श्रुत के संग हो सके, अवधी मन पर्याय ।
केवल ज्ञान अखंड है, और अकेला थाय ॥ ६ ॥
पहिले तीनों ज्ञान में, होते त्रय कुज्ञान ।
वे विवेक से हीन हैं, जिनवर देव वखान ॥ ७ ॥
नय के दो ही भेद हैं, निश्चय अरु व्यवहार ।
इनमें शुद्धाशुद्ध से, दो दो और विचार ॥ ८ ॥

* इति श्री लघु तत्त्वार्थ सूत्र प्रथम अध्याय *

पांच भाव हैं जीव के, उनके त्रेपन भेद ।
उनमें इक जीवत्व ही, है निज भाव अछेद ॥ १ ॥
जिय का लक्षण मुख्य कर, उपयोगी हो मान ।
चउ दर्शन अठ ज्ञान से, दो विध उसको जान ॥ २ ॥
जीव भेद सामान्य से, संसारी अरु मुक्त ।
त्रस अरु थावर भेद से, संसारी संयुक्त ॥ ३ ॥
सपरस रसना नासिका, दृग श्रव इन्द्रिय पान ।
द्रव्य भाव से इन्हों में, दो दो भेद पिछान ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थावर जीवनि के विषे, सपरस इन्द्रिय होय ।
क्रम से इक इक अधिक है, त्रस जीवनि के जोय॥ ५ ॥
पर भव गति में जीव के, कर्म योग का जोड़ ।
उसकी अनु श्रेणी गती, मोड़ा या विन मोड़ ॥ ६ ॥
इक दो अथवा त्रय समय, अंनाहार तहँ मान ।
पुनि जनमें उत्पाद या, गर्भ समूर्च्छन जान ॥ ७ ॥
सचित अचित अरु मिश्र या, शीत उष्ण या और ।
ढकी खुली या मिश्र ये, योनि जनम के ठौर ॥ ८ ॥
औदारिक अरु वैक्रियक, आहारक त्रय मान
अरु तैजस अरु कर्म तन, पांच शरीर पिछान ॥ ९ ॥
सर्व मनुज तिर्यंच के, औदारिक तन होय
सुर नारक के वैक्रियक, देह जिनेश्वर वोय ॥१०॥
किसी प्रमत मुनि के कभी, आहारक तन मान
शेष शरीर अनादि से, सब जीवनि के जान ॥११॥
भोग भूमि सूक्ष्म जिया, सुर नारक जिनदेव
इनकी आयु अखंड है, आदि नियम स्वयमेव ॥१२॥

* इति श्री लघु तत्त्वार्थ सूत्र द्वितीय अध्याय *

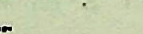

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मध्य अलोकाकाश के, यह त्रैलोक महान ।
रत्न प्रभादिक सात भू, अधोलोक में जान ॥ १ ॥
उनमें नारक वास है, घोर वेदना योग ।
अशुभ देह अरु विक्रया, अरु लेश्या संयोग ॥ २ ॥
मध्य लोक में जानना, द्वीप समुद्र अपार ।
जम्बु द्वीप उन मध्य में, मेरु नाभि वत् धार ॥ ३ ॥
सात क्षेत्र भरतादि हैं, जम्बू द्वीप मझार ।
क्षेत्र विभाजक शैल हैं, हिमवन आदिक सार ॥ ४ ॥
पद्मादिक छै ताल हैं, उनके ऊपर खास ।
श्री आदि छै देवियां, उनपर करें निवास ॥ ५ ॥
गंग सिन्धु से आदि लग, रक्तारक्तो मान ।
सब चौदह नदियां बहें, उन तालों से जान ॥ ६ ॥
ऐरावत अरु भरत में, पलटें सब ही काल ।
चौथे से छट्टे तलक, कर्म भूमि की चाल ॥ ७ ॥
धात खण्ड पुष्कर अरध, रचना दूनी मान ।
ढाइ द्वीप में मनुज हों, आर्य मलेच्छ कहान ॥ ८ ॥
मनुज और तिर्यंच की, आयु जिनेश्वर इष्ट ।
अन्तर मुहुरत अल्प है, तीन पल्य उत्कृष्ट ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

* इति श्री लघु तत्त्वार्थ सूत्र तृतीय अध्याय *

देव चारविध उन्हों में, भवन भेद दश मान ।
व्यन्तर अठ पन ज्योतिषी, कल्प भेद द्वय जान ॥ १ ॥
षोडस सौ धर्मादि हैं, कल्पो पन्न विमान ।
नव ग्रैवक तेईस हैं, कल्पा तीत विमान ॥ २ ॥
ब्रह्म स्वर्ग ऊपर वसे, लौकांतिक सब देव ।
जाति भेद इनके विषें, आठ कहे जिन देव ॥ ३ ॥
सुर नारक की अल्प वय, वर्ष सहस दश इष्ट ।
तेतिस सागर वय कही, सुर नारक उत्कृष्ट ॥ ४ ॥
सुर नर नारक छोड़ कर, शेष सर्व पशु थोक ।
थावर निवसें सर्व थल, त्रस पशु इस ही लोक ॥ ५ ॥

* इति श्री लघु तत्त्वार्थ सूत्र चतुर्थ अध्याय *

धर्माधर्माकाश अरु, पुद्गल जीव प्रवीण
बहुत प्रदेशी द्रव्य सब, निज निज रूप तलीन ॥ १ ॥
इनमें चेतन जीव है, पुद्गल रूपी मान
नभ तक इक इक द्रव्य है, और क्रिया बिन जान ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और काल इक द्रव्य है, अमित समय दातार ।
इन द्रव्यों का वास है, लोकाकास मँझार ॥ ३ ॥
गुण पर्यय युत द्रव्य सब, गुण में गुण मत मान ।
द्रव्य गुणों का परिणमन, सो पर्याय पिछान ॥ ४ ॥

* इति श्री लघु तत्त्वार्थ सूत्र पंचम अध्याय *

मन वच तन की क्रिया ही, योग रु आस्रव मान ।
शुभ से पुण्यरु अशुभ से, पापास्रव पहिचान ॥ १ ॥
तत्त्व विषे ईर्षा अरुचि, विघन दोष छल रोक ।
ज्ञान दर्शनावरण का, आवे आस्रव थोक ॥ २ ॥
आस्रव हो शोकादि से, कर्म असाता ऐन ।
आस्रव जीवदयादि से, साता का सुख देन ॥ ३ ॥
देवादिक में दोष से, आस्रव दर्शन मोह ।
अरु कषाय के उदय से, आस्रव चारित मोह ॥ ४ ॥
बहु आरम्भ रु उपधि से, नरक आयु का मान ।
मायाचार प्रधान से, तिर्यग आयू जान ॥ ५ ॥
आस्रव सरल स्वभाव से, मनुज आयु का होय ।
आस्रव संयम आदि से, देव आयु का जोय ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योग वक्र अरु सरल से, नाम कर्म का होय ।
दर्शन शुद्धी आदि से, तीर्थंकर का जोय ॥ ७ ॥
निन्दा और प्रशंस से, गोत्र कर्म का मान ।
विघ्न करण से आस्रवा, अंतराय का जान ॥ ८ ॥

* इति श्री लघु तत्त्वार्थ सूत्र षष्टम अध्याय *

हिंसादिक पन पाप से, विरत भये व्रत ठोर ।
उनकी पन पन भावना, मैत्री आदिक और ॥ १ ॥
इन सब युत अरु शल्य बिन, व्रत धारी बड़ भाग ।
वे मुनि श्रावक उन्हों में, श्रावक ग्यारह भाग ॥ २ ॥
महाव्रती मुनि अव्रती, दर्शन प्रतिमा वान ।
शेष जु प्रतिमा वान सब, देश व्रती पहिचान ॥ ३ ॥
बारह व्रत प्रारम्भ से, अणु व्रत धर के संग ।
शंकादिक से रहित ही, सच्चा समकित अंग ॥ ४ ॥
बंधादिक अतिचार से, रहित सर्व व्रत मान ।
धन आदिक का त्याग भी, पर हित कारण दान ॥ ५ ॥
संलेखन धारण भयें, व्रत जु सफलता होय ।
जीने की इच्छादि से, रहित समाधी जोय ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

* इति श्री लघु तत्त्वार्थ सूत्र सप्तम अध्याय *

मिथ्या दर्शन अरु तथा, अविरत योग कषाय ।
इनसे पुद्गल ग्रहण हो, वही बंध कहलाय ॥ १ ॥
प्रकृति देश अनुभाग थिति, बंध भेद ये चार ।
अरु आवरण स्वभाव को, प्रकृति बंध निरधार ॥ २ ॥
ज्ञानावरणी आदि हैं, प्रकृति बंध के भेद ।
इक सौ अड़तालीस हैं, उनके उत्तर भेद ॥ ३ ॥
जिय प्रदेश में प्रकृति की, जो थिति निश्चित आन ।
उस स्थिति का नाम है, स्थिति बंध पिछान ॥ ४ ॥
कर्म थिती सामान्य से, अन्तर मुहुरत मान ।
सत्तर कोड़ा कोड़िया, सागर तक पहिचान ॥ ५ ॥
फल देने की शक्ति को, कहें बंध अनु भाग ।
जैसा जिसका नाम है, तैसा फल दे भाग ॥ ६ ॥
जीव कर्म सम्बन्ध को, कहते बंध प्रदेश ।
वह होता है प्रति समय, ऐसा जिन उपदेश ॥ ७ ॥

* इति श्री लघु तत्त्वार्थ सूत्र अष्टम् अध्याय *

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आस्रव भाव निरोध से, निश्चय संवर होय।
वह मुनियों के मूल अरु, उत्तर गुण से जोय ॥ १ ॥
व्रत आदिक अठ वीस तक, सर्व मूल गुण मान।
गुप्ति आदि युत भेद सब, उत्तर गुण पहिचान ॥ २ ॥
इच्छा रोधन मूल तप, वही निर्जरा कार।
बाह्याभ्यंतर भेद दो, उसके लेय निहार ॥ ३ ॥
अनशन आदिक भेद सब, बाह्य जु तप के मान।
प्रायश्चित से आदिलग, आभ्यन्तर के जान ॥ ४ ॥
मिश्र प्रमत मिथ्यात बिन, शेष चढ़त गुण थान।
अगणित अगणित निर्जरा, होवे लेह पिछान ॥ ५ ॥
शुद्ध रु शुभ उपयोग से, मुनिवर दोय प्रकार।
शुद्धास्रव से रहित हैं, शुभ आस्रव के धार ॥ ६ ॥

* इति श्री लघु तत्त्वार्थ सूत्र नवमां अध्याय *

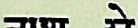

घाति कर्म के नाश से, होवे केवल ज्ञान।
शेष कर्म के नाश से, मोक्ष होय पहिचान ॥ १ ॥
इनके इक जीवत्व अरु, क्षायिक भावनि छोड़।
शेषनि का सद्भाव नहिं, ऐसा सत् दृग जोड़ ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पीछे उस जड़ देह से, कुछ कम पुरुषाकार ।
कढ़ि प्रदेश शुद्धात्म के, निवसे जग पग धार ॥ ३ ॥
उसमें पूर्व प्रयोग अरु, संग रु बंध अभाव ।
ऊरध गमन स्वभाव के, कारण ऊपर जाव ॥ ४ ॥
पूर्व प्रयोग समाप्त अरु, धर्म जु द्रव्य अभाव ।
आगे गमन न होय फिर, कहें केवली राव ॥ ५ ॥
गति आदिक से भेद नहि, सिद्धजियों में मान ।
क्षेत्र आदि से भेद है, सिद्धजियों में जान ॥ ६ ॥

जिन मत से न विरोध है, पूर्वापर न विरोध ।
यदि भासे तो संत जन, कर लीजो अविरोध ॥

* इति श्री लघु तत्त्वार्थ सूत्र दशमां अध्याय *

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समझना चाहिये मानना चाहिये

* श्री वीतरागाय नमः *

(श्री १०८ महा मुनि वीरसागर प्रणीत)

卐 वस्तु-स्थिति 卐

[सामान्य-विशेषात्मक]

जब सामान्य भक्षक तब विशेष रक्षक

जब कोई सामान्य पढ़ि, करता दुरुउपयोग।
तब विशेष रक्षा करे, जैसे औषध रोग॥

☆ उदाहरण ☆

* सामान्य जिनोपदेश *

१—अपने समान सबको समझो।

* विशेष जिनोपदेश *

सब मैत्री गुणिजन भगति, दुखी दया शठसंग
साम्यभाव मेरे करो, हे जिन करुणा अंग।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

* सामान्य जिनोपदेश *

२—मन्दिर सबका है ।

* विशेष जिनोपदेश *

द्विज न रोक अभिषेकजिन, द्विजनि न पूजा रोक ।
शूद्र न दर्शन रोक है, नीच शिखरकी धोक ॥

* सामान्य जिनोपदेश *

३—जैनधर्म सब धारण कर सकते हैं ।

* विशेष जिनोपदेश *

भेष दिगंबर द्विज धरैं, द्विजनि अर्जिका भेष ।
ऊंच शूद्र क्षुल्लक बने, नीच अणुव्रत लेश ॥

* सामान्य जिनोपदेश *

४—धर्म का मूल दर्शन है ।

* विशेष जिनोपदेश *

केवल चारित धर्म है, धर्म वही समभाव ।
मोह क्षोभसे रहित ही, समरस जीव स्वभाव ॥

* सामान्य जिनोपदेश *

५—जड़ क्रिया में धर्म नहीं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

* विशेष जिनोपदेश *

जड़ क्रिया में धर्म नहिं, नहीं पुण्य अघ कर्म ।
भाव क्रिया में पुण्य अघ, ज्ञान क्रिया में धर्म ॥

* सामान्य जिनोपदेश *

६—निमित्त कुछ नहीं करता ।

* विशेष जिनोपदेश *

मुक्ति न होय निमित्त से, चहुँगति निमिताधीन ।
अशुभ निनितसे अशुभ गति, शुभसे शुभगतिचीन ॥

* सामान्य जिनोपदेश *

७—शूत्र जल का त्याग ।

* विशेष जिनपोंदेश *

व्रती न पीवें शूद्र जल, अपर न पीवे नीच ।
इनके परशन मात्रसे, शुद्धि करो जल सींच ।

---

* विशेष जिनोपदेश का आशय *

सामान्य का दुरुपयोग होने पर विशेष उपदेश ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृपया इस ग्रन्थको निम्नांकित तिथि पर या उसके पूर्व
लौटा दें। विलम्बसे लौटानेपर ५ पैसे
प्रतिदिन दण्ड देना होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi